

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 16, डीकंस्ट्रक्शन

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

उत्तर-संरचनावाद के रूप में जाने जाने वाले आंदोलन ने विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों को जन्म दिया या उनमें शामिल किया, जिन्हें अक्सर बाइबिल की व्याख्या के उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण के संदर्भ में भी देखा जाता है। लेकिन पिछले सत्र में हमने एक दृष्टिकोण, पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण, पर ध्यान दिया, जो अर्थ के निर्धारक के रूप में पाठक पर ध्यान केंद्रित करता है। हमने देखा कि पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण भी कम से कम दो अलग-अलग प्रकार के दृष्टिकोणों के लिए जगह बनाते प्रतीत होते हैं, हालांकि वे सभी इस मायने में समान हैं कि पाठक का ध्यान पाठ को समझने और अर्थ की खोज या निर्माण में शामिल होने पर है।

लेकिन जिन दो दृष्टिकोणों पर हमने सबसे अधिक समय बिताया, उनमें से एक अधिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण था जो पाठकों को पाठ द्वारा निर्देशित या लेखक द्वारा निर्देशित किया जाता था जो कि पाठ में आदर्श पाठक या निहित पाठक की भूमिका निभाते थे। बनाता है या लेखक अपेक्षा करता है कि पाठक उससे पहचान करेगा। स्टेनली फिश जैसे अन्य अधिक कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण के दावे थे जो इस बात से इनकार करने में अधिक दूरगामी थे कि पाठ में कोई अर्थ था, लेकिन इसके बजाय, पाठ पाठक की रचना थी। और पाठक, पाठ एक दर्पण की तरह काम करता है जो दर्शाता है कि पाठक पाठ से क्या लाता है।

हम अपने दृष्टिकोण, अपने दिमाग की संरचनाओं, अपने मूल्यों से इतने प्रभावित हैं कि यह जरूरी नहीं कि यह निर्धारित करेगा कि हम पाठ में क्या पाते हैं। इसने उस दृष्टिकोण को जन्म दिया, उस कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया को एक ऐसे दृष्टिकोण में समाप्त होने के लिए आगे बढ़ाया जा सकता है जिसे डिकंस्ट्रक्शनिज्म या पाठ के डिकंस्ट्रक्टिव रीडिंग के रूप में जाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि विखंडनवाद साहित्यिक हलकों में अधिक व्यापक हो गया है और बाइबिल के अध्ययन में भी इसका प्रभाव बढ़ गया है।

हालाँकि इस बात पर बहस चल रही है कि वास्तव में इसका वर्णन कैसे किया जाए और इसे कैसे वर्गीकृत किया जाए, ऐसा लगता है कि यह केवल एक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि यह एक दार्शनिक दृष्टिकोण या दार्शनिक आंदोलन को भी दर्शाता है। मूल रूप से, बहुत ही सरल स्तर पर, विखंडनवाद सुझाव देता है कि सभी पाठ अंततः स्वयं को कमजोर करते हैं और वे स्वयं को विखंडित करते हैं। अर्थात् पाठ स्थिर नहीं हैं, पाठ में कोई स्थिर अर्थ नहीं है।

इसके बजाय, पाठ संवाद करने में विफल होते हैं, बल्कि वे स्वयं को कमजोर करते हैं, वे स्वयं को विखंडित करते हैं। विखंडनवाद की एक परिभाषा कुछ इस प्रकार है, विखंडनवाद एक पाठ से परस्पर विरोधी अर्थ उत्पन्न कर रहा है और उन अर्थों को एक-दूसरे से अलग कर रहा है। इसलिए विखंडनवाद के मूल में मूलतः संचार है और पाठ आत्म-पराजय है।

इसे कहने का एक तरीका यह है कि पाठ में दरारें या दरारें हैं जो स्थिर अर्थ को असंभव बना देती हैं। कोई स्थिर अर्थ नहीं है, अर्थ मौजूद नहीं है, और इसके बजाय पाठ में अर्थ के बारे में एक कट्टरपंथी संदेह है। वास्तव में, इस दृष्टिकोण के अनुसार पाठ में अर्थ का अभाव है।

मेरा मानना है कि व्याख्या के इस दृष्टिकोण के सबसे प्रसिद्ध समर्थक और जाने-माने समर्थक फ्रांसीसी दार्शनिक जैक्स डेरिडा थे, जो 1930 से 2004 तक जीवित रहे। उनकी समझ के केंद्र में संकेत था और इसका क्या मतलब था और इसका क्या मतलब था। और मूल रूप से, उन्होंने जो कहा, उसका संकेत और उसके संदर्भ के बीच कोई संबंध नहीं था।

कोई फर्क या गैप था, कोई संबंध नहीं था। दूसरे शब्दों में, उनके अनुसार, शब्द अंतहीन रूप से अर्थ को टाल देते हैं। शब्द बस दूसरे शब्दों को संदर्भित करते हैं और वे कभी भी अर्थ नहीं पकड़ पाते, वे कभी अर्थ नहीं पकड़ पाते।

वे कभी भी पूरी तरह से पकड़ में नहीं आते हैं, इसलिए फिर से, कोई स्थिर अर्थ नहीं है। पाठ तब प्रकट या पाठ करता है, जो पाठ में पाया जाता है वह कई और विरोधाभासी अर्थ होते हैं। विखंडनवाद तब पाठ को नष्ट करना है।

और फिर, डेरिडा के लिए मुद्दे का एक हिस्सा सत्ता का मुद्दा था, जिसके सही अर्थ का दावा कोई नहीं कर सकता था, ऐसा करना सत्तावादी था। और इसलिए, पाठ तब अधिनायकवादी अर्थों को पलट देते हैं। पाठ स्थिर व्याख्यात्मक दृष्टिकोण को उलट देते हैं।

तो फिर, वे यह दिखाकर ऐसा करते हैं कि पाठ में कोई सही अर्थ नहीं है। विखंडनवाद सत्तावादी व्याख्याओं को यह दिखाकर पलट देता है कि इसका कोई सही अर्थ नहीं है, कि परस्पर विरोधी या विरोधाभासी अर्थ हैं। तो डेरिडा के लिए, अर्थ हमेशा कुछ ऐसा था जो अस्थिर था, अर्थ अंतहीन रूप से स्थगित था, यह केवल अस्थायी था, यह अधूरा था।

अब डेरिडा ने स्वयं विखंडनवाद को नकारात्मक नहीं देखा, हालाँकि उनके अधिकांश व्याख्याकारों ने देखा है। और फिर डेरिडा जिस कठिनाई का जवाब दे रहा है उसका एक हिस्सा यह है कि कोई पारलौकिक सत्य नहीं है। कोई केंद्र नहीं है।

मूल रूप से, इसके मूल में, विखंडनवाद आम तौर पर नास्तिकता से जुड़ा होता है। वहा भगवान नहीं है। कोई पारलौकिक नहीं है।

वहां कोई केंद्र नहीं है, अर्थ को पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं है। और यदि यह मामला है, यदि कोई पारलौकिक आध्यात्मिक सत्य या कोई केंद्र नहीं है, तो डेरिडा के अनुसार, पाठ में केवल अंतहीन खेल है। इसलिए पूर्ण अर्थ हमसे छूट जाता है।

और यद्यपि डेरिडा को हमेशा अच्छी तरह से स्वीकार नहीं किया गया था, खासकर अन्य दार्शनिकों और आलोचकों द्वारा, उसने व्याख्याशास्त्र और बाइबिल की व्याख्या पर भी एक स्थायी प्रभाव डाला था। एक व्यक्ति, और मैं आपको बाइबिल पाठ के विखंडनात्मक दृष्टिकोण के कुछ उदाहरण दूंगा, लेकिन एक दिलचस्प व्यक्ति, स्टीफन मूर नाम का एक नया नियम विद्वान, ने वास्तव में आयरलैंड में अपना करियर शुरू किया और अब मुझे लगता है कि वह यूनाइटेड में डू विश्वविद्यालय में पढ़ाता है। स्टेट्स, इंग्लैंड में शेफ़ील्ड विश्वविद्यालय में कुछ समय बिताया।

लेकिन स्टीफन मूर अपनी पुस्तकों और लेखों, अपने प्रकाशनों के लिए जाने जाते हैं, जो डेरिडा और विखंडनवाद पर आधारित हैं।

दरअसल, उन्होंने अधिक साहित्यिक क्षेत्र में शुरुआत की और अधिक पाठक प्रतिक्रिया की ओर बढ़ गए और अब उससे आगे बढ़कर व्याख्या के लिए अधिक विखंडनात्मक दृष्टिकोण की ओर बढ़ गए हैं। लेकिन उनके प्रकाशन स्पष्ट रूप से बाइबिल पाठ में डेरिडा के विखंडनात्मक दृष्टिकोण को लागू करने के उनके इरादे को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं। ऐसी पुस्तकों में पोस्टस्ट्रक्चरल पर्सपेक्टिव में मार्क और ल्यूक के रूप में लेबल किया गया है और उनकी एक अन्य पुस्तक, न्यू टेस्टामेंट में पोस्टस्ट्रक्चरलिज्म, डेरिडा और फौकॉल्ट एट द फुट ऑफ़ द क्रॉस है।

और इन ग्रंथों में, इन पुस्तकों में, बाइबिल पाठ, कभी-कभी अंग्रेजी भाषाएं भी, विखंडनवाद के अनुरूप हैं, लेकिन न केवल अंग्रेजी भाषा, बल्कि बाइबिल पाठ में हेरफेर किया गया है और विखंडनात्मक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करता है ताकि जो कुछ बचा है उसके साथ खेलना बाकी है टेक्स्ट। एक उत्कृष्ट उदाहरण जिसे आप अक्सर व्याख्यात्मक ग्रंथों में संदर्भित पाते हैं जो विखंडनवाद पर चर्चा करते हैं या उससे निपटते हैं, स्टीफन मूर का बाइबिल पाठ में विखंडन दृष्टिकोण लागू करने का एक प्रसिद्ध उदाहरण वह तरीका है जिस तरह से वह मार्क की पुस्तक में विखंडन लागू करते हैं। और मुझे बस एक अंश पढ़ने दीजिए।

फिर, यह वह दृष्टिकोण है जिसे अक्सर इस प्रकार के दृष्टिकोण के अनुकरणीय के रूप में संदर्भित किया जाता है। और इसलिए सुनें कि स्टीफन मूर मार्क के सुसमाचार के साथ क्या करते हैं। वह कहते हैं, मार्क के धर्मशास्त्र को आमतौर पर क्रॉस का धर्मशास्त्र कहा जाता है, एक ऐसा धर्मशास्त्र जिसमें जीवन और मृत्यु एक दूसरे से टकराते हैं।

मार्क में, शिष्य का हस्ताक्षर केवल क्रिसक्रॉस या क्राइस्ट क्रॉस का हो सकता है, जिसे मेरा शब्दकोश सामान्य रूप से क्रॉस के निशान के रूप में परिभाषित करता है, विशेष रूप से उस

व्यक्ति द्वारा उसके नाम पर हस्ताक्षर करते समय जो लिख नहीं सकता . यह ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी से आता है। लेकिन लिखने में असमर्थ व्यक्ति आम तौर पर पढ़ने में असमर्थ होता है।

और मार्क में, शिष्य, आम तौर पर यीशु के साथ मतभेद के कारण, पढ़ने में असमर्थ होते हैं। यीशु को अपने भ्रमित शिष्यों से क्रॉसवर्ड बोलना चाहिए। अध्याय 8, श्लोक 33, और अध्याय 8, 17 से 21 तक देखें।

एक क्रॉस भी एक चियास्मस है। और ध्यान दें कि वह क्या कर रहा है। वह पाठ के साथ खेल रहा है और शब्द संघ बना रहा है, यहां तक कि अंग्रेजी वाले भी।

इसलिए उसे लेखक के इरादे या स्थिर सही अर्थ को उजागर करने की कोशिश में कोई दिलचस्पी नहीं है। अब वह बस सभी प्रकार के संबंध बना रहा है और पाठ के साथ मुक्त खेल में संलग्न है। एक क्रॉस भी एक चियास्मस है, एक क्रॉसवाइज फ़्यूज़न जिसमें पहली बार में स्थापित आदेश, जो कोई भी अपना जीवन बचाएगा वह इसे खो देगा, दूसरे उदाहरण में उलटा है।

और जो कोई अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। मार्क के केंद्र में सूली पर चढ़ने का तथ्य है। क्रॉस या चियास्मस की तरह संरचित एक कल्पना।

फिर, मेरा इरादा यह नहीं है कि आप इसे समझें, बल्कि यह देखना है कि इस प्रकार के पढ़ने से क्या होता है। चियास्मस ग्रीक शब्द चियाडज़ेमे से आया है , जिसका अर्थ है एक्स अक्षर से चिह्नित करना, जिसका उच्चारण की होता है। और की, ich का विपर्यय है, जो व्यक्तिगत सर्वनाम। के लिए जर्मन है। और फ़्रायड में तकनीकी शब्द जिसे अंग्रेजी अनुवादकों ने अहंकार के रूप में प्रस्तुत किया है।

और यीशु, जो मार्क 6.50 में अपने डरे हुए शिष्यों के सामने खुद को ईगो ईमी शब्द से पहचानते हैं , जो कि मैं हूं या यह मैं है, के लिए ग्रीक शब्द है, उनके पास खुद का एक नाम है जो फ़्रांसीसी जे सुइस, आई एम की प्रतिध्वनि है। एकमात्र अनावश्यक अक्षर मैं या अहंकार है, जिसे इस

प्रकार हटाने के लिए चिह्नित किया गया है। पिता, वह नहीं जो मैं चाहता हूँ, अहंकार, बल्कि वह जो तुम चाहते हो, अध्याय 14, श्लोक 36।

चिह्नित किया जाना, हम लगभग पूरा हो चुके हैं, एक्स, क्रॉस के साथ चिह्नित किया जाना दर्दनाक है। चियादज़ेमे का अर्थ काटना भी है। चियास्मा का दूसरा अर्थ लकड़ी का टुकड़ा होता है।

और जिस चियास्मा पर यीशु लिखते या लिखते हैं वह एक व्याख्यान के साथ-साथ एक लेखन डेस्क भी है। मरते हुए, वह भजन 22 की पुस्तक खोलता है और प्रारंभिक कविता पढ़ता है, हे भगवान, हे मेरे भगवान, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? क्रिस्टोस का पहला अक्षर ची, ग्रीक वर्णमाला का 22वां अक्षर भी है। भजन 22 के समान।

तो क्या आप देखते हैं कि मूर ने क्या किया है? चाहे यह हमें कितना भी अजीब, पागल या अजीब लगे, यह एक विखंडनात्मक दृष्टिकोण के साथ बहुत सुसंगत है। वह बस पाठ के साथ खेलता है। कोई स्थिर अर्थ नहीं है।

संकेत अंतहीन रूप से अन्य संकेतों को टालते रहते हैं। और इसलिए वह जर्मन और फ्रेंच ला सकता है और सभी प्रकार के अजीब संबंध बना सकता है। क्योंकि उसे उस पाठ का सही अर्थ पकड़ने की कोशिश करने में कोई दिलचस्पी नहीं है जो लेखक का इरादा था या जो पाठ में पाया जाता है।

लेकिन उत्तर-संरचनात्मक और विखंडनात्मक दृष्टिकोण के बजाय, जो डेरिडा की अंतर्दृष्टि पर आधारित है, स्टीफन मूर इसे विखंडनात्मक दृष्टिकोण से पढ़ते हैं। कुछ अन्य उदाहरण देने के लिए, एक पुराने नियम का विद्वान जो बाइबिल पाठ की व्याख्या करने के लिए डिकंस्ट्रक्टिव तरीकों या डिकंस्ट्रक्शनिज्म को लागू करने में रुचि रखता है, वह डेविड डीजे क्लाइन्स है। जिन्होंने कई लेख लिखे हैं जो विखंडनात्मक दृष्टिकोण लागू करते हैं।

उनमें से एक नौकरी पर है. और दिलचस्प बात यह है कि जब आप अय्यूब की किताब पढ़ते हैं तो वह क्या कहता है, ईश्वर अय्यूब को सही ठहराता है। फिर से यह दिखाने के लिए कि पाठ कैसे स्वयं में बदल जाता है और स्वयं को विघटित कर देता है।

परमेश्वर अय्यूब की पुस्तक में अय्यूब को सही ठहराता है। लेकिन अय्यूब ने किताब में दावा किया है कि ईश्वर ने उसके साथ गलत व्यवहार किया या उसे दंडित किया। लेकिन अगर ईश्वर अय्यूब को सही ठहराता है और उसका समर्थन करता है, तो इसका मतलब यह होना चाहिए कि ईश्वर स्वयं अय्यूब के साथ जिस तरह व्यवहार करता है और जो कहता है, उसमें अन्याय करता है।

तो अय्यूब का पाठ स्वयं ही अपने आप को धोखा देता है। यह अपने आप में बदल जाता है. यह विखंडन करता है।

कुछ अन्य उदाहरण देने के लिए, एक व्यक्ति, एक प्रसिद्ध विद्वान जिसने नए नियम के पाठ की व्याख्या करने के लिए कभी-कभी विखंडनात्मक तरीकों को लागू किया है, वह जॉन डोमिनिक क्रॉसन है। जिन्हें अक्सर जीसस सेमिनार में निभाई गई भूमिका के लिए अधिक जाना जाता है। और कुछ बातें जो उन्होंने ऐतिहासिक यीशु के बारे में निष्कर्ष निकाली हैं।

वह कौन था और उसने क्या कहा, इसके बारे में हम क्या जान सकते हैं और क्या नहीं। लेकिन जॉन डोमिनिक क्रॉसन ने दृष्टान्तों पर काफी कुछ लिखा है। अक्सर उनकी व्याख्या करना और उन्हें विखंडनात्मक प्रकार के दृष्टिकोण से पढ़ना।

उदाहरण के लिए, सबसे दिलचस्प चीज़ों में से एक जो मैंने देखी है, मैंने दूसरों को इसका उल्लेख करते देखा है, लेकिन मैंने देखा और पढ़ा है। क्या उसका उपचार खेत में खज़ाने के दृष्टान्त से है। मैथ्यू 13 में याद रखें, यीशु ने परमेश्वर के राज्य की तुलना करने के लिए एक दृष्टान्त का उपयोग किया था।

वह व्यक्ति है जो मैदान में जाता है। उन्हें एक खज़ाना मिलता है और वे जाकर अपना सब कुछ बेच देते हैं। तो वे इस खेत को खरीद सकते हैं और खजाने पर कब्ज़ा कर सकते हैं।

जॉन डोमिनिक क्रॉसन ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि व्यक्ति को राज्य के लिए सब कुछ त्याग देना चाहिए। लेकिन फिर वह आगे बढ़कर कहते हैं, लेकिन अगर किसी को सब कुछ छोड़ देना चाहिए। यदि मनुष्य को सब कुछ त्याग देना चाहिए, तो उसे इस दृष्टांत को भी त्याग देना चाहिए।

और अंततः परित्याग का त्याग कर देना चाहिए। तो फिर, जैसा कि डोमिनिक क्रॉसन स्वयं कहते हैं, वह बस स्वतंत्र खेल में संलग्न है। वह ऐसा पाठ है जिसकी व्याख्या कोई भी हमेशा के लिए कर सकता है।

एक अन्य पुस्तक जो अक्सर विखंडनात्मक प्रकार के दृष्टिकोण के अधीन रही है, वह रहस्योद्घाटन की पुस्तक है। दिलचस्प बात यह है कि जिस तरह से रहस्योद्घाटन को अक्सर विखंडनात्मक दृष्टिकोणों के लिए स्वीकार्य माना जाता है। वह इस तथ्य को देख रहा है कि इसका कोई स्थिर अर्थ नहीं है।

कि पुस्तक परस्पर विरोधी अर्थ उत्पन्न करती है। यह अपने आप में बदल जाता है। यह स्वयं का खंडन करता है।

रहस्योद्घाटन में, जॉन रोम की हिंसा और बल प्रयोग के लिए उसकी निंदा करता हुआ प्रतीत होता है। रोम को बार-बार एक जानवर के रूप में चित्रित करके। और इसे रक्तपात और बल पर निर्मित बताया गया।

और संतों की मृत्यु पर बनाया गया। बल्कि पूरी दुनिया में हर किसी की जान भी ले रहा है। जॉन बार-बार रोम की निंदा करता है, उसकी हिंसा और उसकी ताकत के लिए साम्राज्य की निंदा करता है।

हालाँकि, जॉन की रोम की निंदा वास्तव में उनकी पुस्तक को कमजोर करती है। जब न केवल जॉन ने रोम की निंदा की। लेकिन जब ईश्वर हिंसा और बल द्वारा रोम को दंडित करना समाप्त कर देता है।

मुहरों और महामारी के रूप में. विभिन्न विपत्तियाँ. मुहरें और बैल और तुरहियां।

और अंततः अंतिम निर्णय. अंतिम निर्णय. जहाँ परमेश्वर दुष्टों और दुष्टों को आग की झील में फेंक देता है।

रहस्योद्घाटन के विखंडनात्मक दृष्टिकोण इस तथ्य पर जोर देते हैं और उजागर करते हैं। जबकि जॉन रोम की हिंसा और बल प्रयोग की निंदा करता है। जॉन के संदेश की पुस्तक स्वयं को कमजोर करती है।

यह तब ध्वस्त हो जाता है जब ईश्वर रोम को उसी हिंसा और बल से दंडित करता है जिसकी जॉन निंदा करता है। तो फिर ईश्वर भी उसी अपराध का दोषी है जैसा रोम का है। जैसा कि रोम पर आरोप लगाया गया है और उसे दंडित किया गया है।

इसके अलावा, ईश्वर अंततः बुराई पर विजय नहीं पाता क्योंकि वह बुराई को नष्ट करने के लिए बुराई का उपयोग करता है। तो रहस्योद्घाटन को उन शब्दों में समझने के मूल में। एक विखंडनात्मक दृष्टिकोण है जो रहस्योद्घाटन में किसी भी स्थिर अर्थ का अभाव देखता है।

और इसके बजाय परस्पर विरोधी अर्थ उत्पन्न कर रहे हैं। यह कि पाठ एक प्रकार से टूट जाता है और पाठ स्वयं को कमजोर कर देता है। तो पुराने नए नियम की व्याख्या के लिए विखंडनात्मक दृष्टिकोण के मूल्यांकन के माध्यम से हमें क्या कहना चाहिए? सबसे पहले।

मेरी राय में विखंडनात्मक दृष्टिकोण अंततः फिर से विरोधाभासी हैं। धर्मग्रंथ के पाठ को ईश्वर द्वारा प्रेरित समझने के साथ। विखंडनात्मक दृष्टिकोण अंततः ईश्वर के साथ संघर्ष में हैं।

जो बाइबिल पाठ में अपने रहस्योद्घाटन को अंकित करता है। और अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे इसे समझें और इसका पालन करें तथा इसे व्यवहार में लाएँ। मुझे ऐसा लगता है कि यह दृष्टिकोण उस दृष्टिकोण से भिन्न है जो कहता है कि इसका कोई स्थिर अर्थ नहीं है।

पाठ केवल परस्पर विरोधी व्याख्याएँ और परस्पर विरोधी अर्थ उत्पन्न करते हैं। जिसे एक दूसरे के खिलाफ खेला जा सकता है. या एक दृष्टिकोण जो कहता है कि कोई स्थिर अर्थ नहीं है।

ऐसा कोई आध्यात्मिक सत्य या वास्तविकता या अर्थ नहीं है जो व्याख्या को आधार और आधार प्रदान करता हो। दूसरा है विखंडन करना चाहिए। विखंडनात्मक दृष्टिकोणों को अंततः स्वयं का विखंडन करना चाहिए।

और जैसा कि बहुतों ने पहचान लिया है. यह दिलचस्प है कि कम से कम कुछ लेखक। हालाँकि शायद स्टीफन मूर का जो उदाहरण हमने पढ़ा वह अपवाद होगा।

लेकिन कुछ लेखक समझने के लिए दोबारा लिखते हैं। और विखंडनवाद की उनकी समझ को संप्रेषित करना। एक तरह से हम इसे समझ सकेंगे.

अंत में फिर से. स्पष्ट रूप से विखंडनात्मक दृष्टिकोण के साथ। पाठ में जो मिलता है उसमें उनकी व्यक्तिपरकता और सापेक्षता प्रबल होती है।

ताकि अच्छे या बुरे पढ़ने या व्याख्या के लिए फिर से कोई मानदंड न रह जाए। तो जो लोग इसमें रुचि रखते हैं कि क्या अच्छी या बुरी रीडिंग होती है। क्या इसकी सही या गलत व्याख्याएँ हैं?

क्या किसी पाठ का अच्छा या बेहतर वाचन और व्याख्याएँ हैं। इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने में मदद करने वाले विखंडनवाद में बहुत कम मूल्य मिलेगा। लेकिन शायद विखंडनवाद की कुछ अंतर्दृष्टियों का उल्लेख करना आवश्यक है।

मुझे लगता है कि कम से कम विखंडनवाद हमें याद तो दिलाता है। कभी-कभी व्याख्या की ढिलाई या गड़बड़ी का। यह भी कि यह हमेशा एक सीधी प्रक्रिया नहीं होती है।

इन विधियों को आगमनात्मक रूप से लागू करने का। और पाठ के शुद्ध वस्तुनिष्ठ अर्थ को अमूर्त करने में सक्षम होना। लेकिन विखंडनवाद हमें व्याख्या की गड़बड़ी की याद दिलाता है।

जैसा कि पॉल कहते हैं, हम दर्पण के माध्यम से धुंधला देखते हैं। जिसे मैं मानवीय पापपूर्णता में योगदान दूँगा। अर्थ की अंतर्निहित अस्थिरता के बजाय।

और किसी स्थिर अर्थ या किसी आध्यात्मिक वास्तविकता का अभाव। या स्वयं ईश्वर का अस्तित्व। दूसरी बात, मुझे लगता है, कभी-कभी विखंडनवाद हमें याद दिला सकता है।

पाठ में तनाव को बहुत जल्दी उजागर न करें। जब पाठ में विरोध या तनाव प्रतीत हो। विखंडनवाद हमारा ध्यान उस ओर आकर्षित कर सकता है।

और हमें याद दिलाएं कि उन पर बहुत जल्दी ध्यान न दें। और फिर अंततः मैं विखंडनवाद के बारे में सोचता हूँ। पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण के समान।

विनम्रता उत्पन्न करने के कार्य। फिर से यह एहसास हुआ कि हम अपनी धारणाएँ लेकर आते हैं। पाठ के प्रति हमारी पूर्वधारणाएँ।

हम इसे अपनी पृष्ठभूमि से पढ़ते हैं। वह मनुष्य की पापबुद्धि के कारण। व्याख्या हमेशा एक आसान और सीधी प्रक्रिया नहीं होती है।

इसमें कभी-कभी गड़बड़ी हो जाती है। विखंडनवाद हमें पाठ को विनम्रता के साथ अपनाने में मदद कर सकता है। यह दुभाषिया में विनम्रता पैदा कर सकता है।

दुभाषिया की सीमाओं को समझने में। जब हम बाइबिल पाठ के पास पहुंचते हैं। इतना कहने के बाद हम वैचारिक दृष्टि से आगे बढ़ेंगे।

बाइबिल पाठ के प्रति बस कुछ वैचारिक दृष्टिकोण। लेकिन फिर से उत्तर-संरचनावादी या विखंडनवाद। संभवतः अक्सर सबसे चरम रूप के रूप में देखा जाता है।

पाठ के उत्तर-संरचनात्मक दृष्टिकोण का। अक्सर वह जो इंजील व्याख्या के लिए सबसे कम उत्तरदायी होता है। वह ईश्वर के वचन को ईश्वर के संचार के रूप में देखता है।

यह एक वास्तविकता है जो अर्थ को आधार बनाती है। और आधार व्याख्या. एक स्थिर अर्थ है.

हालाँकि इस तक पहुँचना कठिन है। कितना भी हो हम उस तक नहीं पहुंच सकते. संपूर्ण और पूर्णतः.

हम अभी भी काफी हद तक ऐसा कर सकते हैं। खिड़की कितनी भी धुंधली और अंधेरी क्यों न हो। वहाँ अभी भी एक खिड़की है.

और परमेश्वर के व्यक्तित्व में एक वास्तविकता है। वह आधार अर्थ है. तो उन कारणों से अक्सर विखंडनवाद।

या व्याख्याशास्त्र के विखंडनात्मक दृष्टिकोण। आमतौर पर उन्हें सबसे कम उत्तरदायी और सबसे कम मूल्यवान माना जाता है। कम से कम इंजील संबंधी व्याख्याओं के लिए।

मुझे इसके बारे में दो और टिप्पणियाँ करने दीजिए। पाठ के प्रति उत्तर-संरचनावादी या उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण। मुझे संक्षेप में बताने के लिए फिर से वापस आने दीजिए।

जिसे अक्सर व्याख्या के उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण का नाम दिया जाता है। जैसा कि मैंने कहा उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण। मुट्टी भर मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है।

या कुछ विशिष्ट विशेषताएं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोणों के पीछे है। या जिसे हम अक्सर उत्तर-आधुनिक व्याख्या के रूप में सुनते हैं।

इनमें से अधिकांश का उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं। लेकिन सबसे पहले, कोई भी सही व्याख्या नहीं है।

एक पाठ का, किसी पाठ की सही व्याख्या की वकालत करना। उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण के लिए।

यह फिर से सत्ता स्थापित करने का एक राजनीतिक कदम है। लेकिन उत्तर-आधुनिकतावाद क्या करना चाहता है। खेल का मैदान समतल है।

अतः कोई भी सही व्याख्या नहीं है। सभी पाठन और सभी व्याख्याएँ समान रूप से मान्य हैं। दूसरी बात जिसकी उत्तर-आधुनिकतावाद वकालत करता है।

क्या यह कि हमारी व्याख्याएँ हमारी पिछली धारणाओं से रंगी हुई हैं। हमारे सामाजिक स्थान, हम पाठ में क्या लाते हैं।

वस्तुनिष्ठ और तटस्थ पर्यवेक्षक जैसी कोई चीज़ नहीं होती। यह पाठ में विशुद्ध रूप से आगमनात्मक तरीके से आता है। लेकिन इसके बजाय फिर से हमारा सामाजिक स्थान।

जो धारणाएँ हम पाठ में लाते हैं। हमारे मूल्य आदि, हमारी परंपराएँ बाइबिल पाठ में हमें जो कुछ मिलता है उसे प्रभावित करेंगी।

और तीसरा, उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार। फिर कोई मेटा-कथा नहीं है।

कोई भव्य कहानी नहीं है. वह हर चीज़ का हिसाब रखता है। लेकिन इसके बजाय सभी कहानियाँ.

सभी आख्यान समान रूप से मान्य हैं। तो इसलिए उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण। उत्तर-संरचनावाद की समानता के साथ।

और विघटनकारी दृष्टिकोण. सुझाव दें कि इसका कोई स्थिर निश्चित अर्थ नहीं है। उत्तर-आधुनिकतावाद स्वीकार करने से इनकार करने की वकालत करता है।

कोई एक सही अर्थ. या पाठ में कोई निश्चित अर्थ। लेखक द्वारा वहां रखा गया।

लेकिन फिर से उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण। यद्यपि स्वाभाविक रूप से कठिन है। बहुलवादी व्याख्या की वकालत के साथ.

और कोई भी सही अर्थ या स्थिर अर्थ नहीं रखता। खासकर इंजीलवादियों के लिए. जो बाइबल को ईश्वर के रहस्योद्घाटन के अभिलेख के रूप में देखते हैं।

उनके लोगों के लिए उनके रहस्योद्घाटन कार्य। वह उनसे अपेक्षा करता है कि वे समझें और उनका पालन करें। उस के बावजूद।

उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण एक बार फिर। ईसाई पाठकों और दुभाषियों के लिए कार्य कर सकता है। विनम्रता उत्पन्न करना.

पाठ पर नम्रतापूर्वक आना। हमारी पापपूर्णता को पहचानना. और अपनी मानवीय सीमाओं को पहचानना।

जब हम किसी पाठ की व्याख्या करते हैं। दूसरा। पुनः उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण।

यह हमें यह पहचानने में मदद कर सकता है कि हम पाठ में क्या लाते हैं। और तीसरा. हमें भी पैदा कर सकता है.

जैसा कि हमने पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के साथ देखा। सुनने के लिए। क्योंकि ईसाई हमें अन्य आवाजें सुनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

या पाठ पर अन्य दृष्टिकोण. और जब वे दृष्टिकोण पाठ के साथ संरेखित होते हैं। जैसा कि मैंने कहा, इससे हमें उबरने में भी मदद मिल सकती है।

हमारा अपना हेर्मेनेयुटिकल मायोपिया। या पाठ की व्याख्या करने में हमारी अपनी अदूरदर्शिता। उत्तर-आधुनिक प्रकार के दृष्टिकोणों का एक और पहलू।

अथवा व्याख्याशास्त्र कहाँ चला गया है। और जा रहा है. मैं बस उस पर संक्षेप में बात करना चाहता हूँ।

और वह कुछ मायनों में प्रचलन में आ गया है। और अभी भी यह देखना बाकी है कि वास्तव में इसके साथ क्या किया जाएगा। लेकिन इसे बाइबिल की व्याख्या के लिए वैचारिक दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है।

यह जानबूझकर कुछ वैचारिक दृष्टिकोण से पाठ की व्याख्या करना है। और पास आता है. और इसके पीछे धारणा ये है.

वह ग्रंथ वैचारिक होते हैं। बाइबिल के ग्रंथ वैचारिक हैं। उसमें वे मान्यताओं और मूल्यों को दर्शाते हैं।

और एक निश्चित संस्कृति और स्थान में एक लेखक की धारणाएँ। तो किसी पाठ में अर्थ वास्तव में परिणाम है। वास्तव में वैचारिक है.

कि यह एक संस्कृति में लेखक के संघर्ष का परिणाम है। खुद को मुखर करना. खुद को अभिव्यक्त करने के लिए.

ताकि पाठ आवश्यक रूप से मूल्यों को प्रतिबिंबित करे। हितों। और लेखक की मान्यताएँ और धारणाएँ।

और इसलिए पाठ के प्रति वैचारिक दृष्टिकोण कुछ चीजें करते हैं। नंबर एक। वे पाठ के वैचारिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करने का प्रयास करते हैं।

और लेखक. यह इस तथ्य का प्रतिबिंब है कि पाठ एक निश्चित समय और स्थान पर तैयार किया गया था। इसलिए कुछ मामलों में वैचारिक दृष्टिकोण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कुछ हद तक मेल खाते हैं।

लेखक और उसकी स्थिति से प्रश्न पूछना। उसका सामाजिक स्थान. लेकिन यह क्या करता है.

यह कोशिश करता है. जैसा मुझे समझ में आया। कम से कम आंशिक रूप से.

यह पाठ के वैचारिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करने का एक प्रयास है। और लेखक किस प्रकार पाठकों को उस दृष्टिकोण से आकार देने का प्रयास कर रहा था। लेकिन दूसरा.

वैचारिक दृष्टिकोण आगे बढ़ते हैं और पाठक को पाठ की वैचारिक आलोचना में शामिल होने और उससे गुजरने के लिए कहते हैं। अतः यह वैचारिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करता है। मूल्य।

पाठ की धारणाएँ. लेखक की मान्यताएँ. लेकिन यह आगे बढ़ता है और नोट करता है कि कुछ अन्य दृष्टिकोणों को कहीं खामोश कर दिया गया है।

या फिर आवाज नहीं दी. या यह पूछता है. यह नाजायज़ को देखता है।

प्रायः वैचारिक आलोचना के रूप में देखा जाता है। शक्ति का नाजायज प्रयोग समझा गया। तो यह देखता है कि लेखक ने पाठकों को अपने वैचारिक दृष्टिकोण से कैसे समझाने का प्रयास किया है।

यह देखता है कि कैसे अन्य दृष्टिकोणों को खामोश कर दिया गया है। और यह मूलतः पाठ के परिप्रेक्ष्य की आलोचना करता है। आमतौर पर आधुनिक पाठक के मूल्यों और चिंताओं तथा उसकी संस्कृति में रुचि के आलोक में।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ जिसे अक्सर नारीवादी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। या नारीवादी आलोचना. और व्याख्या के प्रति उनका दृष्टिकोण.

नारीवादी दृष्टिकोण या बाइबिल पाठ की नारीवादी आलोचना। अक्सर बाइबिल पाठ को एक तरह से पढ़ने का परिणाम होता है। यह एक बार फिर महिलाओं के प्रति उसके दमनकारी रवैये को उजागर करता है।

यह फिर से मान लेता है. कभी-कभी पाठ के पारंपरिक ऐतिहासिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर भरोसा करना। यह मानता है कि बाइबिल पाठ अक्सर बहुत ही पितृसत्तात्मक संस्कृति में तैयार किए गए थे ।

पुरुष प्रधान संस्कृति. और इसलिए यह उस परिप्रेक्ष्य से विश्लेषण करने के लिए पाठ को पढ़ता है। लेकिन उस वैचारिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करें।

और यह कितना दमनकारी है. और यह कैसे महिलाओं पर अत्याचार करता है और उन्हें चुप करा देता है। और इसलिए यह पाठ को इस तरह से पढ़ता है जो महिलाओं के प्रति मुक्तिदायक है।

और महिलाओं के प्रति. तो यह पाठ के बाहर के परिप्रेक्ष्य से शुरू होता है। मुक्ति की आवश्यकता.

जुल्म का एहसास. महिलाओं की ओर से उत्पीड़न और बहिष्कार का अनुभव। और यह पाठ को इस तरह से पढ़ता है जो उत्पीड़न की विचारधारा को उजागर करता है।

और फिर यह महिलाओं की मुक्ति का आह्वान करता है। पाठ पढ़ने में. तो उस संबंध में यह पुराने मुक्ति धर्मशास्त्र के समान है।

या पाठ का मुक्ति वाचन। इसलिए यह पाठ की वैचारिक सीमाओं की आलोचना करता है। फिर से यह विचारधारा के नाजायज इस्तेमाल को उजागर करने की कोशिश करता है।

सत्ता का नाजायज प्रयोग. और यह इस बात पर ध्यान देने का प्रयास करता है कि कुछ दृष्टिकोण कहाँ शांत हो जाते हैं। यह नोट करता है कि पाठ कुछ पाठकों जैसे कि महिलाओं के लिए दमनकारी है।

पुराने नए नियम की एक प्रसिद्ध नारीवादी व्याख्याकार। खासकर न्यू टेस्टामेंट. हार्वर्ड के विद्वान हैं.

हार्वर्ड प्रोफेसर एलिज़ाबेथ शूस्लर फियोरेंज़ा। एक जर्मन विद्वान. जो विशेष रूप से नए नियम को फिर से पढ़ता है।

महिला या महिलाओं के उत्पीड़न और बहिष्कार के अनुभव के प्रकाश में। और मुक्ति के लिए उनका संघर्ष। इसलिए फियोरेंज़ा मानदंडों के अनुरूप पाठ को पढ़ता है।

किसी सिद्धांत या मानदंड के प्रति सचेत रूप से अपील करना। बाइबिल के बाहर ही. यही जुल्म के अनुभव की ज़रूरत है।

और मुक्ति की आवश्यकता. और फिर वह बाइबिल को अपनी संरचना में पितृसत्तात्मक के रूप में देखती है। और वह ऐसी पढ़ाई में संलग्न है जो इसकी आलोचना करती है।

वह दृष्टिकोण और दिखाता है कि यह कितना दमनकारी है। और इसे इस तरह से पढ़ता है जो महिला पाठक के लिए अधिक मुक्तिदायक हो। फिर, नारीवादी दृष्टिकोण भी देखा जा सकता है।

पाठ के प्रति अधिक क्रांतिकारी दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य से देखा जा सकता है। जैसा कि कभी-कभी अधिक नरम के विपरीत होता है। बेहतर शब्द के अभाव के कारण.

पाठ के प्रति अधिक नरम दृष्टिकोण। इनमें से उत्तरार्द्ध की व्याख्या के लिए कुछ मूल्य हो सकते हैं। यहां तक कि इंजीलवादियों के लिए भी.

बाइबिल पाठ की व्याख्या करने के लिए अधिक क्रांतिकारी दृष्टिकोण का एक उदाहरण। पुनः प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाया जाता है। और विशेष रूप से एक विद्वान ने किसी भी अन्य से अधिक कार्य किया है।

वकालत करना, बाइबिल पाठ के वैचारिक पढ़ने या नारीवादी पढ़ने की वकालत करना। और वह टीना पिप्पिन नाम की एक नए नियम की विद्वान हैं। टीना पिप्पिन ने रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर काफी कुछ लिखा है।

अपने अधिकांश लेखों में इस बात की वकालत की गई है कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक महिलाओं के लिए एक असुरक्षित स्थान है। यह महिलाओं के प्रति शत्रुतापूर्ण है। और मूलतः इसे पढ़ा ही नहीं जाना चाहिए.

महिलाओं के लिए इसका कोई मूल्य नहीं है। और वह क्या करती है, वह पाठ पर जाती है और वह नोट करती है कि महिला के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। महिला के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है.

में भी, विशेषकर पुस्तक की प्रतीकात्मक दृष्टि में। वह नोट करती है कि महिला, महिला, के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। वास्तव में आप प्रकाशितवाक्य के अध्याय 2 और 3 तक वापस जा सकते हैं।

यह ध्यान देने के लिए कि सात संदेशों या सात पत्रों में भी कैसे। महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। उदाहरण के लिए, वह पाठ जिसे मैं ढूँढ रहा हूँ।

जहाँ लेखक इज़ेबेल नामक महिला का उल्लेख करता है। और वह श्लोक 22 में कहते हैं। यह अध्याय 2 और श्लोक 22 है।

थुआतिरा की कलीसिया के लिए संदेशों में से एक। वह कहता है, फिर भी मेरे मन में यह बात तुम्हारे विरुद्ध है। यह श्लोक 20 है।

आप उस महिला इज़ेबेल को बर्दाश्त करते हैं जो खुद को भविष्यवक्ता कहती है। इज़ेबेल शायद उसका असली नाम नहीं है। लेकिन पुराने नियम का एक नाम जो लेखक ने उसे दिया है।

बस उसे चित्रित करने के लिए। और वह कहता है, ईज़ेबेल यही सिखाकर मेरे दासोंको व्यभिचार करने के लिथे भरमाती है। और मूर्तियों को बलि किया हुआ भोजन खा रहे हैं।

मैंने उसे अपनी अनैतिकता पर पश्चाताप करने का समय दिया है। लेकिन वह अनिच्छुक है। और श्लोक 22.

इसलिये मैं उसे दुःख की शय्या पर डालूँगा। और जो उसके साथ व्यभिचार करेंगे उनको मैं अत्यन्त दुःख दूँगा। जब तक कि वे अपने तरीकों से पश्चाताप न करें।

तो ध्यान दीजिए टीना पिप्पिन इसे पढ़ेंगी और कहेंगी। देखिए इस किताब में महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। उसके साथ बस एक वेश्या जैसा व्यवहार किया जाता है।

बिस्तर पर फेंक दिया. और कष्ट सहना पड़ा. लेकिन रहस्योद्घाटन के दर्शन में ही पिप्पिन।

वह महिलाओं के अन्य संदर्भों की ओर भी ध्यान आकर्षित करती हैं। उदाहरण के लिए, अध्याय 12 में जॉन एक महिला का दर्शन देखता है।

जो स्वर्ग के तारों से सुशोभित है। और वह गर्भवती है और एक बच्चे को जन्म देने के लिए तैयार है। तो वहां भी महिला की प्राथमिक भूमिका सिर्फ बच्चों को जन्म देना है.

लेकिन इसके अलावा, जब कथा चलती है. बाद में कहानी में. श्लोक 6. जब वह पुत्र को जन्म देती है।

अजगर। यह ड्रैगन. दर्शन का दूसरा भाग.

अजगर महिला के पीछे चला जाता है. और पद 6 में। वह स्त्री जंगल में उस स्थान पर भाग गई जो परमेश्वर ने उसके लिए तैयार किया था। इसलिए महिला हाशिए पर और अलग-थलग है।

वह एक तरह से रेगिस्तान में निर्वासित है। कोई भूमिका नहीं निभाने के लिए रेगिस्तान में मजबूर किया गया। अध्याय 17.

पुनः, अध्याय 17 में। ध्यान दें कि बेबीलोन कैसे है। संभवतः रोम शहर का संदर्भ।

अध्याय 17 में एक ऐसी महिला के रूप में चित्रित किया गया है जो एक वेश्या है। इसलिए महिला केवल अध्याय 17 में ही प्रकट होती है।

अचानक वह एक वेश्या बन गई। पुरुषों द्वारा दुर्व्यवहार और उपयोग किया जाता है। और वास्तव में, अध्याय 17 के बिल्कुल अंत में।

दरअसल, हाँ, अध्याय 17। ध्यान दें कि महिला कैसे नष्ट हो जाती है। इसे कहते हैं।

जानवर। यह प्रकाशितवाक्य का अध्याय 17 है। श्लोक 16 में।

वह पशु और उसके दस सींग जो तू ने देखे। इससे पहले अध्याय 17 के दर्शन में। जो जानवर और दस सींग तुमने देखे, वे वेश्या से घृणा करेंगे।

और वे उसे उजाड़ देंगे, और नंगा छोड़ देंगे। वे उसका मांस खायेंगे और उसे आग में जला देंगे। तो पिप्पिन का दृष्टिकोण है।

औरत। यह महिलाओं के लिए सुरक्षित किताब नहीं है। महिलाएं हाशिये पर हैं।

वे वेश्याएं हैं। वे पीड़ित हैं। वे पुरुष के शिकार हैं।

जहां तक वेश्यावृत्ति की बात है तो यौन संबंध। उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। उन्हें पीटा गया है।

यहाँ तक कि अध्याय 21 भी। यहाँ तक कि अध्याय 21 भी। जहाँ हम अधिक सकारात्मक क्षेत्र में प्रतीत होते हैं।

जहां तक बात है महिलाओं को किस नजरिये से देखा जाता है। नये यरूशलेम की तुलना स्त्री से की जाती है। एक औरत।

लेकिन फिर। पिप्पिन अपने में प्रवेश करने वाले राष्ट्रों की भाषा ग्रहण करती है। बल्कि वस्तुतः।

जैसे कि वह यौन रूप से उसमें प्रवेश कर रहा हो। तो रहस्योद्घाटन में महिला। वेश्या है।

पुरुषों द्वारा पीड़ित। उसे रेगिस्तान में निर्वासित कर दिया गया है। और अध्याय 21 में भी।

वह पुरुष कामुकता की वस्तु है। तो टीना पिप्पिन के लिए। रहस्योद्घाटन की पुस्तक.

महिलाओं के लिए सुरक्षित जगह नहीं है. और वास्तव में वह यह सब एक साथ अस्वीकार करती है। और इसे महिलाओं के प्रति शत्रुतापूर्ण चीज़ के रूप में देखता है।

पढ़ने के लिए अधिक नरम दृष्टिकोण हो सकता है। फिर से पुराने और नए टेस्टामेंट को स्त्री दृष्टिकोण से देखना। पाठ पढ़ने के तरीके फिर से उजागर हो सकते हैं।

वह शायद हम चूक गए होंगे. यह वास्तव में पाठ के ही अधिक अनुरूप हो सकता है। एक दिलचस्प वाचन.

इसमें कई दिलचस्प संभावनाएँ हैं। एक बिंदु पर मुझे इसका सामना करना पड़ा। जॉन अध्याय 4 पर वापस जाता है। हमने इस पाठ पर कुछ बार विचार किया है।

पाठ की पृष्ठभूमि के संबंध में. सामरी के सन्दर्भ में. तथ्य यह है कि यीशु जिस महिला से मिलते हैं वह सामरी है।

और सामरी लोगों के साथ यहूदी संबंधों की पृष्ठभूमि और इतिहास। वह अच्छा नहीं था. और इससे हमारे किसी पाठ को पढ़ने के तरीके में कैसे फर्क पड़ता है।

लेकिन यह भी दिलचस्प है कि यीशु की मुलाकात एक महिला से होती है। और इसलिए जॉन का अध्याय 4। जब हम यीशु के संवाद और महिला के साथ उनके जुड़ाव को पढ़ते हैं तो यह बहुत दिलचस्प होता है।

और जो होता है. यीशु मूल रूप से इस महिला से सवाल करना और बातचीत करना शुरू करते हैं। और वह बहुत दिलचस्प बात कहते हैं.

वह महिला से अपने पतियों को बुलाने के लिए कहता है। वहीं महिला का कहना है कि मेरा पति नहीं है। और फिर यीशु कहते हैं मैं जानता हूँ कि तुम नहीं जानते।

आपके पास उनमें से पांच हैं। और अब तुम जिसके साथ रह रही हो वह तुम्हारा पति नहीं है। अब आमतौर पर जिस तरह से हम इसे पढ़ते हैं।

और इसे पढ़ना सिखाया गया है। क्या यह महिला जिसके साथ यीशु रहता है, अत्यधिक अनैतिक है? शायद वह एक वेश्या है।

लेकिन वह अनैतिक है। वह जिससे चाहती है उससे रिश्ता जोड़ लेती है। वह शादी को बरकरार नहीं रख सकती।

वह एक पति से दूसरे पति के पास छलांग लगाती है। और अब किसी ऐसे व्यक्ति से रिश्ता तोड़ लेती है जिससे उसकी शादी भी नहीं हुई है। इसलिए उसे बहुत ही नकारात्मक रूप में चित्रित किया गया है।

और अक्सर हम पाठ इसी प्रकार पढ़ते हैं। और हमें इसे पढ़ना कैसे सिखाया गया है। फिर भी दिलचस्प है।

इस पाठ के कुछ दृष्टिकोण जो मैंने पढ़े हैं। वह इसे एक महिला के दृष्टिकोण से देखने के प्रति अधिक संवेदनशील है। या स्त्री दृष्टिकोण।

संभवतः ऐसा सुझाव देता है। शायद हमने यह सब गलत पढ़ा है। औरत नहीं तो क्या हुआ।

क्या होगा अगर यह महिला जिसके साथ यीशु संवाद करते हैं। वेश्या या स्वच्छंद जीवनयापन करने वाली स्त्री नहीं है। या वह जो बस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में छलांग लगाता है।

और आसपास सोता है. अगर यह महिला पीड़ित है तो क्या होगा? अगर पतियों ने छोड़ दिया तो क्या होगा.

और उस दिन और उम्र में. पति से मोह न रखना। इसे असंभव नहीं तो बहुत कठिन बना दिया होता।

उसके जीवित रहने के लिए. और इसलिए तथ्य यह है कि उसने पांच शादियां की हैं। क्या सिर्फ उसकी गलती नहीं है.

लेकिन शायद इसलिए कि पुरुषों या पतियों ने ही उसे छोड़ दिया है। और इसके कारण उसे लगातार पुनर्विवाह करना पड़ा। और खुद को दूसरे पति से जोड़ लेती है.

और हालाँकि वह अब जिसके साथ है। क्या उसका पति नहीं है? फिर भी वह खुद को पुरुष छवि से जोड़ना जरूरी समझती है।

सिर्फ अस्तित्व की खातिर. तो कभी-कभी बेहतर शब्द की कमी के कारण नरम। नारीवादी या वैचारिक दृष्टिकोण.

किसी पाठ या परिप्रेक्ष्य में अंतर्दृष्टि प्रकट हो सकती है। इससे उसके अपने दृष्टिकोण में अंधे धब्बे उजागर हो सकते हैं। और वास्तव में यह पाठ के साथ और भी अधिक सुसंगत हो सकता है।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है. अक्सर वैचारिक दृष्टिकोण के कार्यों में से एक। क्या ऐसा वे अक्सर कर सकते हैं, जैसा कि मैंने कहा है।

उसकी अपनी व्याख्या में अंधे धब्बे उजागर करें। कभी-कभी वैचारिक दृष्टिकोण परिप्रेक्ष्य को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। वे स्वयं पाठ के अधिक निकट हैं।

जैसे स्त्री दृष्टिकोण. हालाँकि फिर भी किसी को वैचारिक दृष्टिकोण के रुख के बारे में जागरूक होना चाहिए। यह केवल बाइबिल पाठ की विचारधारा की आलोचना करता है।

पाठ की विचारधारा को जाने बिना। या पाठ का धर्मशास्त्र. हमारे वैचारिक दृष्टिकोण की आलोचना करें।

और बाइबिल पाठ की व्याख्या करने के लिए हमारे दृष्टिकोण। तो यह वास्तव में हमें अंत तक लाता है। बाइबिल की व्याख्या के उत्तर-संरचनात्मक दृष्टिकोण को देखने का।

विशेषकर पाठकोन्मुख प्रतिक्रियाएँ। बाइबिल पाठ के प्रति पाठक उन्मुख दृष्टिकोण। संक्षेप में कहें तो हमने व्याख्याशास्त्र और व्याख्या को देखा है।

तार्किक रूप से और यहाँ तक कि ऐतिहासिक रूप से भी आगे बढ़ गया है। संचार के तीन मुख्य चरणों के माध्यम से। अर्थात् एक लेखक एक पाठ का निर्माण करता है।

और इसे उन पाठकों तक पहुँचाता है जिन्हें इसे अवश्य पढ़ना चाहिए और इसका अर्थ समझना चाहिए। हमने देखा कि पाठ केन्द्रित या लेखक केन्द्रित दृष्टिकोण। ऐतिहासिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण से संबंधित हैं।

यह पाठ के पीछे एक प्रकार के फोकस के अर्थ को देखता है। ऐसे दृष्टिकोण जो पाठ के पीछे अर्थ और व्याख्यात्मक गतिविधि का पता लगाते हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पुनर्निर्माण जैसी बातें।

पाठ में जिन ऐतिहासिक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। पाठ को समझने में मदद के लिए उन्हें उजागर करना। स्रोत-सूचित आलोचना जैसी चीज़ों को देखते हुए।

और पुनर्लेखन आलोचना जो पाठ के पीछे के स्रोतों पर ध्यान केंद्रित करती है। और अंततः उस लेखक पर जो पाठ का निर्माण करता है। फिर लेखक केंद्रित उस फोकस तक पहुंचता है।

लेखक का इरादा पाठ तैयार करने वाले लेखक पर ध्यान केंद्रित करना है। और लेखक का इरादा अर्थ के निर्धारक के रूप में है। हमने देखा कि लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण में निहित कुछ कठिनाइयों के कारण।

व्याख्या तार्किक और ऐतिहासिक रूप से आगे बढ़ी। विशेष रूप से नहीं बल्कि आम तौर पर पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर आगे बढ़े। जहां पाठ ही अर्थ का केंद्र बिंदु था।

और इस प्रकार औपचारिकता में निहित विभिन्न साहित्यिक दृष्टिकोण उत्पन्न हुए। कथात्मक आलोचना. संरचनावाद जैसी बातें.

केवल पाठ की सतही संरचना को नहीं देखना। लेकिन अंतर्निहित गहरी संरचना. और विरोध जैसी चीजों को देख रहे हैं.

और अभिनेताओं और आख्यानो का कार्य। अलंकारिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण जो समग्र रूप से पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हैं। पाठ केंद्रित दृष्टिकोण जो संपूर्ण पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

और पाठ में रहने वाले अर्थ को खोजें। लेकिन फिर से उनमें से कुछ दृष्टिकोणों की कठिनाइयों के कारण। और स्थिर अर्थ प्रदान करने में उनकी असमर्थता.

और वस्तुनिष्ठ अर्थ प्रदान करना. फिर व्याख्या अधिक पाठक-केंद्रित दृष्टिकोणों में चली गई। और अधिक पोस्ट संरचनात्मक दृष्टिकोण।

वह पाठक प्रतिक्रिया आलोचना पर केंद्रित था। यह कि पाठक पाठ में अर्थ खोजता है या बनाता भी है। पाठ में कोई वस्तुनिष्ठ अर्थ नहीं है।

कोई पाठ नहीं है. लेकिन पाठक पाठ का अर्थ समझ लेता है। इससे भी अधिक चरम दृष्टिकोण जो पाठ को एक दर्पण की तरह देखते हैं।

यह केवल पाठक के स्वभाव को दर्शाता है। और पाठक के मूल्य और विश्वास। और पाठक जिस समुदाय का है।

और फिर अंततः उससे भी आगे विखंडनात्मक दृष्टिकोण तक। जहाँ पाठ का कोई स्थिर अर्थ ही नहीं है। ग्रंथ स्वयं को विखंडित करते हैं।

वे स्वाभाविक रूप से अस्थिर हैं। वे परस्पर विरोधी अर्थ उत्पन्न करते हैं। और परस्पर विरोधी और विरोधाभासी व्याख्याएँ।

ताकि परिणाम और लक्ष्य केवल पाठ के साथ खेलना हो। एक अंतहीन मुक्त खेल। एक अंतहीन व्याख्या।

और फिर अंततः हमने कुछ वैचारिक दृष्टिकोणों पर ध्यान दिया। नए और पुराने टेस्टामेंट को आम तौर पर कैसे देखा जाता है। वैचारिक शक्तियों के संदर्भ में।

लेखक का वैचारिक दृष्टिकोण। और उसे उजागर कर रहा हूँ। और फिर उसकी आलोचना भी कर रहे हैं।

यह प्रदर्शित करने के लिए कि यह कहां अन्यायपूर्ण हो सकता है। जहाँ वह कुछ पाठकों के लिए दमनकारी हो सकता है। फिर मैं आगे क्या करना चाहता हूँ।

अगले सत्र में। हम अपना ध्यान एक तरह से स्थानांतरित करना शुरू कर देंगे। और अपना ध्यान व्याख्या के अन्य तरीकों पर केंद्रित करें।

अन्य दृष्टिकोण जो इन विभिन्न पहलुओं के अंतर्गत आते हैं। जिसे हमने अभी देखा है। अधिक पाठकीय एवं ऐतिहासिक।

या पाठ केन्द्रित. मुझे खेद है लेखक और ऐतिहासिक। पाठ केन्द्रित या पाठक केन्द्रित।

विभिन्न तरीकों और दृष्टिकोणों पर गौर करना शुरू करें। इनका उपचार आमतौर पर व्याख्यात्मक पाठ्यपुस्तकों में किया जाता है। और व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण तरीकों के रूप में देखे जाते हैं।

और अगले सत्र से शुरुआत. हम समाजशास्त्रीय आलोचना पर गौर करना शुरू करेंगे। और संक्षेप में फिर से संक्षेप में बताएं कि वह क्या है।

पुराने और नए नियम के अध्ययनों में इसका उपयोग कैसे किया गया है। और कमजोरियों और शक्तियों का भी मूल्यांकन करें। और यह व्याख्याशास्त्र और बाइबिल पाठ की व्याख्या में कैसे उपयोगी हो सकता है।